uhpyh Hkfe (nku rhu) e /kku-lg-eNyh ikyu

क)		10 फीसदी हिस्सा बीच या किनारे में होना चाहिए। 	धान के खेतों की मुख्य समस्या, मिट्टी और जल का कमजोर उत्पादन से निबटा जा सकता है। इसके लिए धान उप्तादन के साथ ही मछली पालन भी किया जाए, जिससे मिट्टी और पानी के संसाधनों का बेहतर इस्तेमाल हो सकता है एवं उपलब्ध पानी का क्रांतिक अवस्था में बेहतर इस्तमाल भी किया जा सकता है।
ख)		 मेढ़ दो फीट चौडा एंव दौ फीट गहरा होना चाहिए ।	uhpyh Hkfe (nku rhu) जहाँ 30–35 सेंटीमीटर जल भराव है का इस्तेमाल /kku–lg–eNyh ikyu खेती के लिए किया जा सकता है। धान के खेत का करीब 10 फीसदी हिस्सा, केंद्रीय शरण क्षेत्र में तब्दील किया जा सकता है, जिसकी गहराई करीब 1 मीटर होना चाहिए। धान की बुवाई के दो सप्ताह बाद, मछली के बच्चे प्रति एकड 50 ग्राम साइज का लगभग 500 पीस की संख्या में छोड़े जा सकते हैं। केंद्रीय शरण क्षेत्र सूखे के लंबे अंतराल के दौरान या पौध सुरक्षा अभियान के दौरान इनकी सुरक्षा करने में सक्षम रहेगा, इसके अलावा मछलियों को भी गतिशीलता के लिए ज्यादा स्थान उपलब्ध होगा। धान की फसल के बाद, बड़ी विकसित मछलियों को निकाल कर, उनके स्थान पर दूसरी छोटी मछलियां यहाँ डाली जा सकती हैं, जो कि वहाँ अगले 2–3 महीने रखी जा सकती हैं। इससे मछलियों का वनज अधिक होगा और कुल उत्पादन बढ़ेगा। प्रति एकड 50 से 150 किलोग्राम का उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है जिसे 150/- रू0 प्रति किलोग्राम विक्री करने पर 7500/- से 22500/- रूप्ये का अतिरिक्त लाभ प्राप्त किया जा सकता है । परंपरागत धान–गेहूँ की खेती के बजाए, इस प्रक्रिया से शुद्ध लाभ में 15–25 प्रतिषत की बढ़ोतरी हो सकती है ।